unite for children

unicef

प्रेस विज्ञप्ति

भारत में मानसूनी बाढ़ : स्थितियों का आकलन

27 अगस्त 2008 : उत्तरी बिहार में कोशी नदी के पूर्वी तटबंध के अचानक टूट जाने से 18 अगस्त 2008 से सुपौल, अररिया, मधेपुरा और पूर्णियाँ जिलों के हजारों गाँव जलमग्न हो गये हैं।

तटबंध में दो किलोमीटर से भी अधिक लंबे कटाव की वजह से नदी के बहाव में परिवर्तन आ गया है और अब वह उन जगहों से होकर बह रही है, जहाँ पहले भयंकर बाढ़ आ जाया करती थी। कुल मिला कर अब तक बिहार के 13 जिलों के 1,081 गाँवों में 14 लाख से अधिक लोग बाढ़ से बुरी तरह से प्रभावित हुए हैं। इसके साथ ही 2,25,000 से भी अधिक घर नष्ट हो गये हैं जिसकी वजह से भारी संख्या में लोगों का विस्थापन हुआ है। आज की तारीख तक 33 लोगों के मरने की खबर आई है और इस संख्या के और अधिक बढ़ने के आसार हैं।

विगत तीन–चार दिनों में मौसम बेहद गर्म और अक्रामक रहा है, जिसकी वजह से विस्थापित लोगों की तकलीफें, खासकर बच्चों, गर्भवती और धात्री माताओं और उम्रदराज महिलाओं की तकलीफें और ज्यादा बढ़ जाती हैं।

सड़कों की स्थिति बेहद खस्ताहाल हो गई हैं तथा बाढ़ ग्रस्त इलाकों में बिजली और जलापूर्त्ति की व्यवस्था बुरी तरह बाधित हुई है। रेल की पटरियाँ डूब गई है और खाने–पीने की आवश्यक वस्तुयें नाव से ले जाया जा रहे हैं।

जो लोग बाढ़ की भयावहता से विस्थापित होकर अन्यत्र पनाह लेने को मजबूर हुये हैं, उनके वापस लौटने की संभावना 2 से 3 महीने बाद ही दीखती है, वह भी तब, जब कटावग्रस्त तटबंधों की मरम्मत कर दी जाये तथा नदी फिर से अपने पहले वाली धारा में बहने न लग जाये। तब तक लोगों को राहत शिविरों में ही रहना पड़ेगा।

स्वास्थ्य : बिहार सरकार के द्वारा मुहैया कराई गई आवश्यक दवायें सिर्फ उन्हीं राहत शिविरों और बाढ़ प्रभावित आबादी तक पहुंच पायी हैं, जहाँ तक पहुँच पाना संभव हो सका है। लेकिन ढेर सारे इलाकों में चिकित्सकों की भारी कमी है।

चूंकि विस्थापित होने वाले लोगों की संख्या लगातार बढ़ती चली जा रही है, राहत शिविरों में भीड़ और अधिक बढ़ जाएगी, जिसकी वजह से कई प्रकार की बीमारियाँ फैलेगी।

आहार और पोषाहार : बिहार सरकार हेलिकॉप्टरों से बाढ़ में डूबे गाँवों में खाने के पैकेट गिरा रही है। कई राहत शिविरों में मेजवान आबादी, जिसमें युवकों के समूह, स्थानीय एन0 जी0 ओ0 और व्यावसायिक संगठन पका–पकाया भोजन और खाने के लिये तैयार खाद्य सामग्री वितरित कर रहे हैं।

जल एवं स्वच्छता : अधिकांश राहत शिविरों में पीने का पानी हैंडपम्प के जरिये उपलब्ध है। और अतिरिक्त हैंडपम्पों की जरुरत है क्योंकि वर्तमान उपलब्ध हैंडपम्पों से सभी लोगों की जरुरतों पूरी नहीं हो पा रही हैं। जो लोग छोटी नदियों के किनारे रह रहे हैं, वो नदियों का दूषित पानी पी रहे हैं।

सामान्य तौर पर राहत शिविरों में साफ–सफाई की स्थिति काफी अपर्याप्त है। शौचालयों की संख्या एकदम अपर्याप्त रहने की वजह से लोग खुले में शौच कर रहे हैं। बुखार और डायरिया के मामलों में काफी वृद्धि हो रही है। चिलचिलाती धूप, असुरक्षित पेयजल और गंदगी की वजह से इन बीमारियों में और अधिक बढ़ोत्तरी होने की संभावना है।

यूनिसेफ की मदद : यूनिसेफ ने बाढ़ से सर्वाधिक प्रभावित तीन जिलों – सुपौल, अररिया और मधेपुरा में स्थितियों का आकलन करने के लिये 23–24 अगस्त 2008 को टीम भेजा था। दो टीमों ने, जहाँ तक पहुंच पाना संभव था, वहां तक जाकर राहत शिविरों और बाढ़ प्रभावित इलाकों का भ्रमण करके उन लोगों की जरुरतों का पता लगाया, जो विस्थापित हुये थे तथा जो लोग विस्थापितों की मेजबानी कर रहे थे। यह पता लगाने के लिये कि यूनिसेफ क्या मदद कर सकता है, प्रखण्ड और जिला के अधिकारियों के साथ सभायें की गई है।

स्थानीय सरकार और एन जी ओ साझेदारों के साथ मिल कर यूनिसेफ ने कुछ आवश्यक वस्तुओं को उपलब्ध कराया है, जिसमें शामिल हैं – लाईफ जैकेट, 4,00,000 हैलोजन की गोलियाँ, 25,000 किलो ब्लीचिंग पाउडर तथा 30,000 ओ0 आर0 एस0 पैकेट। यूनिसेफ अपने साझेदारों के साथ मिलकर इस आपतकाल से प्रभावित बच्चों और महिलाओं की जरुरतों को पूरा करने के लिये लगातार काम करती रहेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :–
श्री अलीस्टेयर ग्रेटारसन, संचार विशेषज्ञ, यूनिसेफ, भारत दूरभाष : +91 - 98-715-35586 E-mail : agretarsson@unicef.org

United Nations Children's Fund
73 Lodi Estate
New Delhi 110003

Telephone +91-11-24690401
Facsimile +91-11-24627521
www.unicef.org/India